

2, 3, 1, 5, 4, 5, 3.

वर्षेदा adj. dass. AV. 2, 11, 4. VS. 4, 11.

वर्न्, वर्न्ति (वर्न्ने) DĀTUP. 34, 7. (परि) वर्न्ति, वृष्याम् 3. sg., वृष्यामः
वृक्ते (वर्न्ने) DĀTUP. 24, 19. वर्क्, वर्क्त्तम्, (अप) अर्क्त्तम् AV. 13, 2, 9. वर्षाक्ति
(वर्न्ने, Vop. वृत्ते) DĀTUP. 29, 24. वर्षाक्त्तः; वृक्त्तः (vgl. DĀTUP. 24, 19), वृक्त्तैः
वर्न्ति, वृक्त्तैः, वृक्त्तयाम्, वृक्त्तयाम्; अर्क्त्तम्, अर्क्त्तयाम्, वृत्तिः; वर्न्ति, ँतेः
pass. वृक्त्तते, वृक्त्तः; infin. वर्न्ते, वृक्त्तसे. 1) wenden, drehen: वृष्णाक्तिं ति-
ग्मार्थतुसुषुं वृष्णात् RV. 4, 7, 10. — 2) abdrehen, ausraufen (das Gras
zur Streu am Altar): वर्न्ति यत्सुदासि वृष्णा वर्क् RV. 1, 67, 7. 83, 6. 142,
5. वृक्ते कृ वृष्णासा वर्न्तिरुग्मा 6, 11, 5, 10, 110, 4. TBa. 3, 6, 22, 1. — 3) Jmd
den Hals brechen NAIG. 2, 19. वृष्णाक्त्तयाम् वृष्णाक्त्तयाम्: RV. 6, 18, 8. लं कु-
त्साय वृष्णां द्वाप्रुषे वर्क् 26, 3. — 4) ablenken (vom Wege); beseitigen: इमं
कुर्वे मरुत्तं न वृष्णां (infin.) RV. 8, 63, 1. विशां वर्न्तिषीणाम् welche
den Gott ab- d. h. zu sich lenken 1, 134, 6. शाराहृदन्त्या वनानि वृत्ति
AV. 6, 30, 2. वृष्णात्तुष्यतः कामम् 8, 68, 5. पाप्मानं मे वृष्णाः KAUSH. UP. 2,
7. — 5) med. Etwas von Jmd (gen. abl.) abwenden, abspannen, vorent-
halten, abalienare: तैरेषोषां तामर्न्मवृष्णात् TBa. 1, 4, 3, 3, 5, 3, 4. पप्रून्
2, 3, 5, 2. इन्द्रियम् TS. 2, 1, 4, 5. यज्ञं धातुव्यस्य 5, 4, 2. 3, 1, 7, 3. 5, 1, 3, 2.
6, 3, 3. अनया वा इन्द्रं विष्णाः मरुत्तं वर्न्ति 7, 1, 5, 5. ÇAT. Ba. 1, 5, 2, 9. 6,
6, 2, 2. प्राणान् 9, 2, 1, 17. न देषो विकृते ऽन्य इन्द्रायो वृष्णाः AIT. Ba. 6, 6.
इष्टापूर्तं ते वृष्णाये (वृष्णाये die Hdschr.) 8, 15. एतद्दृक् पुरुषस्याल्पमेधसः
KĀTH. 1, 8. यन्मे माता प्रलुभे विचरन्त्यपतिव्रता । तन्मे रेतः पिता वृ-
क्ताम् (wohl वृष्णां zu lesen) halte fern von mir den Samen (des Ehe-
brüchlers) M. 9, 20. BṚH. Ā. UP. 6, 4, 3 (vgl. ÇAT. Ba. 14, 9, 4, 3). — 6)
med. sich zueignen: वृष्णाते पप्रून्स्त्रियो ऽर्थान्पुरुदस्येवा जनाः BṚH. P. 1,
18, 44. 4, 17, 22. 5, 1, 16. — 7) med. für sich erwählen: आसामेकतां वृ-
ष्णां सर्वाणां स्वर्गभूषणाम् BṚH. P. 11, 4, 14.

— caus. वर्न्ति (वर्न्ने) DĀTUP. 34, 7. aus metrischen Rücksichten
bisweilen auch med. 1) beseitigen, vermeiden, unterlassen, entsagen,
verzichten auf; mit acc. der Sache oder der Person KĀND. UP. 2, 22, 1.
RV. PĀT. 6, 10, 15, 8. क्रोधान्तं LĀTJ. 3, 3, 25. दानाध्ययने ऀच. GRH. 4,
4, 17. मोक्षमिधुने KĀTJ. Ç. 2, 1, 8. KAUC. 73. 141. वर्न्त्येन्मधु मांसं च गन्धं
माल्यं रसान्स्त्रियः । प्रुक्तानि यानि सर्वाणि प्राणिनां चैव किंसनम् ॥ M. 2,
177. 185. 3, 50. 4, 31. 127. 163. 186. 245. 6, 14. 8, 63. 10, 83. JĀN. 1, 33.
130. MBH. 1, 3959. तीर्थानि पञ्च 7840. 2, 1142. 13, 5420. 5659. R. 2, 41,
3 (40, 3 GORR.). धृष्टाचारमधर्मज्ञमस्वाधीनं नराधिपम् । वर्न्त्यति नरा ह्यरा-
न्नदीपङ्कमिव द्विपाः ॥ 3, 37, 5. मृगर्त्तं मरुत्तं वापि शार्दूलं मानुषं गजम् ।
नावर्न्त्यमुपप्राप्तं क्षीणपुण्यः लुधान्वितः ॥ so v. a. ruhig seiner Wege gehen
lassen 73, 17. 4, 13, 20. 5, 8, 17. वर्न्त्येदत्तकृन्मर्त्यं वर्न्त्येदन्मिता ऽनन्तम् 23,
17. 36, 4. 89, 35. KĀM. NITIS. 3, 19. रेतो किं तीरमादत्ते तन्मिथा वर्न्त्यप्यपः
ÇĀK. 153. Spr. 54. 550. 1333. 1729. 3060. 4098. 4765. 4827. VARĀH. BṚH.
S. 53, 86. भार्यां स्पर्शो ऽप्यवर्न्त्यत् KĀTHĀS. 14, 47. 27, 186. BṚH. P. 9, 1, 33.
PĀNĀT. 60, 19. वर्न्त्यति MBH. 3, 13882. Spr. 4380. वर्न्त्येथाः MBH. 3,
10583. यत्र वर्न्त्यते राजा पापकन्दो धनागमम् M. 9, 246. वर्न्त्यिता JĀN.
1, 158. pass.: तत एतानि वर्न्त्यते तीर्थानि MBH. 1, 7845. वर्न्त्यते (lies वर्न्त्य-
त, der Comm. उक्तेत) विषहृषितम् KĀM. NITIS. 7, 9. वर्न्त्यते सेवकः Spr.
3660. सा वर्न्त्यमाना च जनेः KĀTHĀS. 66, 87. यस्मान्न वर्न्त्यतिमिदं वनं ते मम
HĀRIV. 1886. सज्जनिर्वर्न्त्यतः Spr. 727. वर्न्त्यतच्छं रामम् (die ed. Bomb.

hat eine ganz andere Lesart) R. 2, 33, 5. वर्न्त्यते शयनीयं ते भर्त्रा केनाद्य
हेतुना R. GORR. 2, 74, 15. — 2) pass. um Etwas kommen, verlustig ge-
hen einer Sache (instr.): धर्मभार्गिनरो नित्यं वर्न्त्यते (die neuere Ausg. hat
eine andere Lesart) HĀRIV. 10962. वर्न्त्यत dem es an Etwas gebracht,
— fehlt, frei von, ohne Etwas seiend; die Ergänzung im instr. oder im
comp. vorangehend: रूपं भूषणैरपि वर्न्त्यतम् MBH. 3, 2584. लतपीर्त्तिनिः
2784. रामेण R. 3, 51, 12. VARĀH. BṚH. S. 53, 38. अतिथिः ° MUND. UP. 1, 2,
3. शरत् ° (शरद्) M. 3, 204. 4, 176. BṚH. 4, 19, 11, 55. MBH. 3, 1760. 4,
306. R. 1, 1, 87 (94 GORR.). 2, 27, 11. 37, 22, 60, 18. 3, 32, 41. 5, 90, 17. Suçā.
1, 69, 5. KĀM. NITIS. 10, 21. VARĀH. BṚH. S. 19, 20. 54, 52. षष्टिः पञ्चवर्न्त्य-
ता sechzig weniger fünf 82. 71, 14. 78, 20. BṚH. 20, 2. Spr. 3339. 3431.
4823. KĀ. 5, 47. KĀTHĀS. 52, 113. 65, 141. RĪĀA-TAR. 3, 29. 6, 279. BṚH.
P. 1, 5, 12. 4, 6, 32. 5, 14, 38. MĀRK. P. 50, 78. H. 409. 854. Schol. zu KĀTJ.
Ç. 329, 11. SARVADARĀNAS. 69, 20. भुक्तिः ° so v. a. ungenießbar PĀNĀT.
138, 2. ohne Etwas seiend so v. a. mit Ausnahme von, nicht einbegrif-
fen — शतसाहस्रिको भागो वस्त्राभरणवर्न्त्यतः HĀRIV. 6308. नान्यं प्रज्ञा-
स्यते कंचिन्मानवं पितृवर्न्त्यतम् R. 1, 8, 8. Spr. 3820. 4773. VARĀH. BṚH. S.
53, 120. BṚH. 11, 3. दण्डं वधवर्न्त्यतम् RĪĀA-TAR. 4, 105. 6, 88. Schol. zu
P. 1, 4, 17. 2, 3, 24. रसखण्डनवर्न्त्यतम् adv. ohne dass die Lust unter-
brochen worden wäre RAH. 9, 35. — 3) ausnehmen, ausschließen, aus-
lassen: देवशब्दम् LĀTJ. 8, 9, 3. वर्न्त्यिता mit Ausnahme von (acc.) M. 3,
276. JĀN. 1, 263. HĀRIV. 7191. 13986. R. 1, 14, 40. 59, 11. 67, 19 (69, 20
GORR.). R. GORR. 1, 76, 17. 3, 4, 46. 4, 36, 14. MĀRK. 123, 11. KĀTHĀS. 8,
20. 80, 93. BṚH. P. 8, 13, 29. KĀ. zu P. 1, 1, 56. Schol. zu 1, 2, 52. 6, 1,
158. वर्न्त्यतस्वकमेवैकः KĀTHĀS. 1, 36. एक एव तु वर्न्त्यतः । सोपानकूपो
विक्रीतात्मकृतो वेष्मनस्ततः ॥ RĪĀA-TAR. 6, 18. अर्वावर्न्त्यते mit Aus-
nahme von आ AV. PĀT. 3, 95. — Vgl. मानवर्न्त्यतः.

— intens.: वरीवृत्तस्थविरेभिः ablenkend mit den starken (Rossen,
um einzukehren, devertens) RV. 7, 24, 4; vgl. P. 7, 4, 65.

— caus. vom intens.: कर्णौ वरीवर्न्त्यते die Ohren hinwunder dre-
hend AV. 12, 3, 22.

— अथि act. an oder über (das Feuer) rücken: पुरोडाशम् ÇAT. Ba. 1,
2, 3, 3. 4. 7.

— अणु s. अणुवृत्तः

— अप 1) abwenden, beseitigen, verschuchen: अपं वृद्धं शत्रून् AV. 3,
12, 6. अपोवृत्तम् 13, 2, 9. नेदतूनपवृष्णां ÇAT. Ba. 4, 3, 2, 8. — 2) abdre-
hen, abreißen: नापं वृष्णाते (sc. तन्नून्) न गमता ऽत्तम् AV. 10, 7, 42. य-
न्नाधानमपं वृष्णां चरित्रैः carpit viam RV. 10, 117, 7. — 3) (ab)brechen) be-
endigen, abschließen, absolvieren ÇAT. Ba. 1, 4, 2, 38. 4, 6, 24. पात्राण्य-
नपवृत्तानि nicht ausgebraucht Schol. zu KĀTJ. Ç. 1066, 18. 490, 1. 493.
24. 328, 19. द्वात्रिंशतमेकादशिन्यो ऽपवृत्त्यते werden abgemacht d. h. voll
ĀPAST. im Comm. zu TBa. I, 112, 12. WEBER, GJOT. 45. — Vgl. अपवर्गा,
अनपवृत्त्य. — caus. 1) meiden, vermeiden, entsagen: तद्रेकमपवृत्त्यपि (अपि
वृत्त्यपि?) MĀRK. P. 50, 63. पुरस्तादेव भगवन्मपितदपवृत्त्यतम् MBH. 12, 3930.
ह्यपवृत्त्यतच्छैः शिराभिः RAH. 17, 79. — 2) pass. verlustig gehen,
kommen um: अपवृत्त्यत dem es an Etwas gebracht, — fehlt, frei von,
ohne Etwas seiend; die Ergänzung im instr. oder im comp. vorange-
hend: षड्भ्रपवृत्त्यताशीतिः VARĀH. BṚH. S. 53, 7. रोमापवृत्त्यतमुरः 70,